सिर्फ़ निम्नवर्ग की समस्या नहीं

वीणा शिवपुरी

दिल्ली के एक धनी मोहल्ले के आलीशान मकान से एक औरत के चीखने चिल्लाने की आवाज़ें आती हैं। सबका ध्यान उस ओर जाता है। घर की बाल्कनी पर बिखरे बाल और कपड़ों में एक औरत निकलती है लेकिन तभी एक मर्द उसे कमरे के भीतर खींच लेता है। दरवाजा धड़ाक से बंद हो जाता है। थोड़ी देर की चीख-पुकार के बाद सब शांत हो जाता है।

बड़े महानगर की एक महिला संस्था में बार-बार एक औरत का फ़ोन आता है। मेरा पति रोज़ मुझे मारता पीटता है। पिछले बीस सालों से मैं यही सह रही हूं। फ़ोन पर वह औरत धारों-धार रोती है लेकिन अपना नाम-पता नहीं बतलाती। संस्था के दफ्तर में आकर मिलने से इंकार करती है।

एक फ़ौजी अफ़सर की पत्नी शादी के अठ्ठाइस साल बाद सबके सामने मुंह खोलती है कि मेरा पति लगातार मुझे लातों-घूसों से मारता रहा है। घर में बच्चों, नौकरों, आने-जाने वालों के सामने भी मुझे मारता है। अब मुझ से और नहीं सहा जाता।

बम्बई के एक मशहूर फिल्म निर्देशक की पत्नी एक अखबार को इंटरव्यू देकर बताती है कि दुनिया के सामने बहुत सभ्य और भला समझा जाने वाला मेरा पति मुझे मारता है।

एक ग़लतफ़हमी

अभी तक एक आम धारणा यही रही है कि पत्नी के साथ मार-पीट जैसा घटिया काम सिर्फ़ अनपढ़, गरीब लोग करते हैं। यह केवल झुग्गी-झोंपड़ियों में होता है। यह एक बहुत बड़ी ग़लतफ़हमी है। जैसे-जैसे इस समस्या पर पड़ा चुप्पी का पर्दा हटा है सच्चाई सामने आई है।

— घर में औरतों के साथ होने वाली मार-पीट हर वर्ग में होती है।
— इसका लोगों की शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता से कोई ताल्लुक नहीं है।
— ऐसी हरकतें सिर्फ़ इक्का-दुक्का खराब घरों में ही नहीं होतीं बल्कि इनकी संख्या बहुत ज्यादा है।
— घरेलू हिंसा का रूप रोज़मर्रा के थप्पड़ों से लेकर बहुत घातक हिंसा तक होता है। औरतों की हड्डियां टूट जाती है, आंख, दांत जाते रहते हैं या जान भी चली जाती है।

समझने की बात: एक

इस तरह की ग़लतफ़हमी का मुख्य कारण यह है कि गरीबों का जीवन खुली किताब होता है। उनके जीवन का दुख-सुख सबके सामने होता है। एक कमरे की झोपड़ी या फुटपाथ पर रहने वाले लोग कुछ भी छिपा नहीं सकते। जबकि बड़े

बंगलों में यही अपराध बंद दरवाजों के पीछे होता है। वहां पैसे के ज़रिए लोगों की चुप्पी खरीदी जा सकती है।

मध्य वर्ग और उच्च वर्ग की औरत झूठी इज्जत और 'लोग क्या कहेंगे' की बेड़ियों से बंधी होती है। हज़ारों मामलों में ये पिटी हुई औरतें अपने शरीर पर पड़े नील के निशानों को छिपा कर दुनिया के सामने सुखी जीवन का नाटक करती हैं।

इसके पीछे के कारणों को समझने की भी जरूरत है। मध्य वर्ग और उच्च वर्ग की औरत जहां एक तरफ़ औरत होने के कारण शोषित और प्रताड़ित है, वहीं उसे अपने वर्ग से कुछ फ़ायदे भी मिलते हैं जिन्हें छोड़ना उसके लिए आसान नहीं होता। जबकि निम्न वर्ग की औरत शादीशुदा होकर भी खुद कमाती और पेट भरती है। शादीशुदा रहने का सामाजिक दबाव तो सभी वर्ग की औरतों पर होता है। फिर भी निम्न वर्ग की औरत आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने की वजह से कुछ ताकत रखती है।

समझने की बातः दो

दूसरी समझने की बात यह है कि पुरुष औरत को इसलिए नहीं मारता कि उसमें समझ या शिक्षा का अभाव है। आज यह बात तो साफ़ है कि बहुत पढ़े-लिखे विद्वानों, कलाकारों और धनियों में भी औरतों को पीटने वाले मर्द मिलते हैं।

इस हिंसा का सीधा संबंध है पुरुष की सत्ता की भावना से। वह औरत को एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक वस्तु समझता है। अपनी संपत्ति समझता है। जिसके साथ वह जैसा चाहे बरताव कर सकता है। इस भावना की जड़ में है पितृसत्तात्मक व्यवस्था जो पुरुष को स्त्री से ऊंचा मानती है। यह व्यवस्था पुरुष को यह अधिकार देती है कि वह औरत को दबा कर रखे।

समझने की बातः तीन

जब कहीं मार-पीट के ऐसे मामले होते हैं तो मौहल्ले और गांव के स्तर पर उसके खिलाफ़ कार्रवाई तो करनी ही चाहिए। लेकिन साथ ही इस समस्या की जड़ पर चोट करना ज़रूरी है। जब तक पुरुषों के मन से उनके बड़प्पन की भावना दूर नहीं होगी इस हिंसा पर काबू पाना कठिन है।

भावनाओं और रवैयों का निर्माण बचपन में होता है। जब तक घर में लड़के-लड़की के बीच भेदभाव दूर नहीं होगा, जब तक घर में भाई बहन को बराबरी का दर्जा नहीं देगा, तब तक उनके रवैयों में बदलाव नहीं आएगा। यही बच्चे जो आज बहनों पर रौब जमाते हैं, हाथ उठाते हैं, कल पत्नी को मारेंगे। जरूरत है आज के लड़कों को सही समझ देने की कि वे अपने आपको बिना कारण बेहतर न समझें और न ही लड़की अपने को कमतर माने। □